Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
NarayS
1

Hindi
Naray S 1.

13. C. 17.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Anurāgarasā.

Anuragras

श्री अनुरागरस

سری انوراگ رس

जिस में

परम प्रेमी भक्त और अनुरागरस रसिकों के प्रेम नियम की दृढ़ता के हेतु युक्ति भजन भाव संयुक्त दोहा छन्दों में भक्ति रूपी अनेक चेतावनी लिखी हैं

जिस को

परम प्रेमी भक्त सज्जन श्रीनारायण स्वामी ने
रचना किया

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में पहिली बार छपी

दिसम्बर सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८१ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार रहीं वह इस फ़िहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा होवे वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नामकिताव	नामकिताव	नामकिताव	नामकिताव
भाषा(इतिहास)	महाभारत पर्व्व अले	रामायण सटीक मय	ब्रह्मोत्तर खण्ड
महाभारत	हदा भी हैं	मानसदीपिका कोष	रसवृष्टि
१-पहिले हिस्सा में	१-आदि पर्व्व	आदि	रसचन्द्रोदय व सुदामाच-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	तथा जिल्द बन्धी	कृष्ण गीतावली
वन पर्व्व	३-वन पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	**नाटक**
२-दूसरे हिस्सा में	४-विराट पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	प्रबोध चन्द्रोदय
विराट पर्व्व उद्योग	५-उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	रामाभिषेक
पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रो-	६-भीष्म पर्व्व	सातों काण्ड	आनन्द रघुनन्दन
ण पर्व्व	७-द्रोण पर्व्व	१-बालकाण्ड	**वेदान्त**
३-तीसरे हिस्सा में	८-कर्ण पर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड	योग वाशिष्ठ
कर्ण पर्व्व शल्य प-	९-शल्य पर्व्व व	३-आरण्यकाण्ड	आनन्दामृतवर्षिणी
र्व्व गदा पर्व्व सौप्तिक	गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	४-किष्किन्धाकाण्ड	सांख्य तत्त्व कौमुदी
पर्व्व योशिक पर्व्व	मय योशिक व विशो-	५-सुन्दरकाण्ड	**काव्य**
विशोक पर्व्व स्त्री प-	क व स्त्री पर्व्व	६-लङ्काकाण्ड	सूरसागर
र्व्व शान्ति पर्व्व में रा-	१०-शान्ति पर्व्व रा-	७-उत्तरकाण्ड	कृष्ण सागर
ज धर्म्म आपद् धर्म्म	ज धर्म्म व आपद् ध-	रामायण शब्दार्थ को	विश्राम सागर
मोक्ष धर्म्म	र्म्म व मोक्ष धर्म्म व	रामायण का इतिहास	प्रेम सागर
४-चौथे हिस्सा में	दान धर्म्म	रामायण मानसदीपि॰	ब्रज विलास बड़ा व छोटा
शान्ति पर्व्व दान ध-	११-अश्वमेध आ-	रामायण कवितावली	कृष्ण प्रिया
र्म्म अश्वमेध आश्र-	श्रम वासिक मुश-	रामायण गीतावली	विनय मुक्तावली
म वासिक पर्व्व व मौ-	ल पर्व्व महाप्रस्था-	सटीक	अनेकार्थ
सल पर्व्व व महाप्र-	न स्वर्गारोहण	विनयपत्रिका बा॰मो॰	छन्दोर्णव पिंगल
स्थान स्वर्गारोहण प-	१२-हरिवंश पर्व्व	विनयपत्रिका बा॰शि॰	कविकुल कल्पतरु
र्व्व	रामायण रामविलास	भाषा विष्णु पुराण	रस राज
हरिवंश पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	लिंग पुराण	सतसई मूल तथा स॰

श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः ॥

अथ अनुरागरस ॥

श्रीनारायण स्वामीजी कृत लिख्यते ॥

श्रीवृन्दावनचन्द्रमध्ये ॥

अथ गुरुवंदना ॥

श्रीगुरुचरण सरोजरज बन्दौं बारम्बार ।
नारायण भवसिन्धुहित जे नौका सुखसार ॥ १ ॥
कृपा करौ मो दीन पै हरौ तिमिर अज्ञान ।
नारायण अनुराग रस निज मति करूं बखान ॥ २ ॥

अथ श्रीराधा गोपाल वंदना ॥

श्रीराधागोपाल पग कर प्रणाम उर धार ।
बरणौं कछु अनुरागरस यथाबुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥
दयासिन्धु अति सुखसदन सदा रहौ अनुकूल ।
नाथ न आनौ हृदय में मोपामर की भूल ॥ ४ ॥

अथ श्रीवृन्दाबन वंदना ॥

धनि वृन्दाबन धाम है धनि वृन्दाबन नाम ।
धनि वृन्दाबन रसिक जन धनि श्रीराधा श्याम ॥ ५ ॥
वृन्दाबन जे बासकरि शाक पात नित खात ।
तिनके भागनकूं निरखि ब्रह्मादिक ललचात ॥ ६ ॥
हम न भये ब्रज में प्रगट यही रही मन आस ।

नितप्रतिनिरखतियुगुलछबि करिवृन्दाबनबास ॥ ७ ॥

चेतावनी पुनि गुण दोष लक्षण ॥

बहुत गई थोरी रही नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही निशि दिन आयुष् खेत ॥ ८ ॥
नारायण सुख भोग में तू लम्पट दिन रैन।
अंत समय आयो निकट देख खोलि कै नैन ॥ ९ ॥
धन यौवन यों जायगो जा बिधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भजि क्यौं चाटै जग धूर ॥ १० ॥
रम्भक शुम्भ निशुम्भ अरु त्रिपुर आदि लै शूर।
नारायण या काल ने किये सकल भट चूर ॥ ११ ॥
हिरण्याक्ष जग में बिदित हिरण्यकश्यप बलवान।
नारायण छिनमें भये ये सब राख मसान ॥ १२ ॥
सगर नहूष ययाति षट और अनेक महीप।
नारायण वह अब कहां भुज बल जीते द्वीप ॥ १३ ॥
कुम्भकरण दशकण्ठ से नारायण रणधीर।
भये सकलभट कालबश जिनके कुलिश शरीर ॥ १४ ॥
दुर्योधन जग में बिदित जरासन्ध शिशुपाल।
नारायण सो अब कहां अभिमानी भूपाल ॥ १५ ॥
नारायण संसार में भूपति भये अनेक।
मैं मेरी करते रहे लै न गये तृण एक ॥ १६ ॥
भुज बल जीते लोक सब निर्भय सुख धन धाम।
नारायण तिन नृपनको लिख्यो रहिगयो नाम ॥ १७ ॥
हाथ जोरि ठाढ़ो रह्यो जिनके सम्मुख काल।

नारायण सोऊ बली परे कालके गाल ॥ १८ ॥
नारायण नवखण्ड में निर्भय जिनको राज।
ऐसे विदित महीपजग ग्रसे काल महराज ॥ १९ ॥
गज तुरङ्ग रथ सेन अति निशि दिन जिनके द्वार।
नारायण सो अब कहां देखो आंख पसार ॥ २० ॥
नारायण निज हाथ पै जे नर धरत सुमेर।
सोऊ बीर या भूमि पै भये राखके ढेर ॥ २१ ॥
जिनके सहजहि पग धरत रज सम होत पषान।
नारायण तिनको कहूं रह्यौ न नाम निशान ॥ २२ ॥
नारायण जिनके भवन विधि सम भोग बिलास।
अन्त समय सब छांड़िकै भये कालके ग्रास ॥ २३ ॥
जिनको रूप निहारि कै रवि शशि रथ ठहरात।
नारायण ते स्वप्न सम भये मनोहर गात ॥ २४ ॥
रे मन क्यों भटकत फिरै भजु श्रीनन्दकुमार।
नारायण अबहूँ समुझु भयो न कछू बिगार ॥ २५ ॥
नारायण शुभ काजते जा बिधि आवत लाज।
जो ऐसे अघ सो करै फिरि क्यों होइ अकाज ॥ २६ ॥
चारि दिननकी चांदनी यह संपति संसार।
नारायण हरिभजन करु जासों होइ उबार ॥ २७ ॥
उर भीतर अति चाहना बाहर राखत त्याग।
नारायण वा त्याग पै परी भार की आग ॥ २८ ॥
मान बड़ाई ईरषा मन में भरी अनेक।
नारायण साधू बनै देखो अचरज एक ॥ २९ ॥

तेरे भावै कछु करौ भलौ बुरौ संसार।
नारायण तू बैठिकै अपनौ भवन बहार॥ ३० ॥
नारायण सतसंगकरि सीख भजन की रीति।
काम क्रोध मद लोभ में गइ आयुर्बल बीति॥ ३१॥
तनक बड़ाई पाइकै मनमें अधिक गरूर।
नारायण जनि बैठु मग साहिब को घर दूर॥ ३२॥
यह शोभा संसार की ज्यों टेसू के फूल।
नारायण फल आश तजि ललितदेखि जनिभूल॥३३॥
धन विद्या गुण आयुबल यह न बड़प्पन देत।
नारायण सोई बड़ो जाको हरि सों हेत॥ ३४॥
सो दुख भोगत आपही जो दुख अपनी टांट।
नारायण भव रोगकों को लेवैगो बांट॥ ३५॥
तात मात त्रिय भ्रात सुत और सकल परिवार।
नारायण अपनौ वही जाकौ हरि सों प्यार॥ ३६॥
नारायण हरिभजन में तू जनि देर लगाय।
का जानै या देर में स्वासरहै की जाय॥ ३७॥
नारायण बिन बोधके पण्डित पशू समान।
तासों अति मूरख भलो जो सुमिरै भगवान॥ ३८॥
ज्ञान कथा सीखी घनी प्रश्नकरत अति गूढ़।
नारायण बिन धारणा वृथा बकतहै मूढ़॥ ३९॥
पुण्य पाठ पूजा प्रकट करत सहित हंकार।
नारायण रीझैं नहीं चतुरन को सरदार॥ ४०॥
नारायण जाकी बिभव तन धन धरा निकेत।

तिहि हित कौड़ी देतमें करभर करिजल लेत ॥ ४१ ॥
भाव भक्ति सतसङ्गकी स्वपनेहूं नहिँ सार।
नारायण समझै वही सुत दारा की लार ॥ ४२ ॥
पग सों नाव निहार के पुनि गज होय अरूढ़।
भोगन ते तरबो चहै नारायण मति मूढ़ ॥ ४३ ॥
चटक मटक नित छैल बन तकत चलत चहुँ ओर।
नारायण यह सुधि नहीं आज मरैं की भोर ॥ ४४ ॥
नारायण जब अंत में यम पकरैंगे बाँह।
तिनसों भी कहियो हमें अबी सोफतो नाहिं ॥ ४५ ॥
मन लाग्यो सुख भोग में तरन चहै संसार।
नारायण कैसे बनै दिवस रैन को प्यार ॥ ४६ ॥
काम क्रोध मद लोभ की लगी हिये में आग।
नारायण बैराग भट सहित ज्ञान गये भाग ॥ ४७ ॥
बिद्यावन्त स्वरूप गुण सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरि भक्ति बिन यह सबही है रोग ॥ ४८ ॥
नारायण निज हिये में अपने दोष निहार।
ता पीछे तू और के औगुण भले बिचार ॥ ४९ ॥
संत सभा झांकी नहीं कियो न हरि गुण गान।
नारायण फिरि कौन विधि तू चाहत कल्यान ॥ ५०
जिन संतन के दरश सों नारायण अघ जात।
तिन्हें कहत यह फिरतहैं घर घर टुकरे खात ॥ ५१ ॥
बहु विधि पूजा दान ब्रत करत गर्बके साथ।
नारायण बिन दीनता द्रवै न दीनानाथ ॥ ५२ ॥

विद्या पढ़ि करि तू फिरै औरन को अपमान।
नारायण विद्यानहीं ताहि अविद्या जान॥ ५३॥
कथा सुनत गइ आयुबल भयो न मन अनुराग।
नारायण तिन श्रवण सों भवन भलेहैं नाग॥ ५४॥
कथनी कथि केते गये कर्म उपासन ज्ञान।
नारायण चारौं युगन करनी है परमान॥ ५५॥
भीतर सों मैलो हियो बाहिर रूप अनेक।
नारायण तासों भलौ कौवा तनमन एक॥ ५६॥
अपनो साखी आप तू निज मन माहिं विचार।
नारायण जो खोट है ताकूं तुरत निकार॥ ५७॥
जिनको मन निज बश भयौ तजिकर विषय बिलास।
नारायण ते घर रहैं चहैं करैं बनबास॥ ५८॥
नारायण सुख भोग में मस्त सबै संसार।
कोऊ मस्त वा मौज में देखौ आंख पसार॥ ५९॥
नारायण ते धन्य नर जिन बश कीन्हे पांच।
साहिब सों मुख ऊजरे जग की लगी न आंच॥ ६०॥
एक नारि अवगुण भरी एक त्रिया गुणवन्त।
नारायण सोई भली जापै रीझत कन्त॥ ६१॥
रूप रंग सुन्दर घनौ चतुर कुलवती नार।
नारायण तौ कह भयो प्रीतम करत न प्यार॥ ६२॥
चन्द्रबदन मृगसम नयन गति गयन्द मृदु बोल।
नारायण हरि भक्ति बिन यह कौड़ी के मोल॥ ६३।
नारायण तौ कह भयो पाये नयन बिशाल।

नयन वही जिनमें बसें श्रीराधा गोपाल ॥ ६४ ॥
लखी न जिन छबि श्यामकी कियो न पल भरि ध्यान।
नारायण ते जगत में प्रगटे निपट पषान ॥ ६५ ॥
नारायण या जगत में यह दो बस्तू सार।
सबसों मीठो बोलिबो करिबो पर उपकार ॥ ६६ ॥
नारायण परलोक में यह दो आवत काम।
देना मुष्टी अन्नकी लेना भगवत नाम ॥ ६७ ॥
कियो न मानत और को पर हित करत न आप।
नारायण त्यहि पुरुष को मुख देखे सों पाप ॥ ६८ ॥
रक्षा करी न जीवकी दियो न आदर दान।
नारायण ता पुरुष सों रूख भलो फलवान ॥ ६९ ॥
देत फूल फल पात दल तनक नीर तरु पाय।
नारायण तासों गयो खांड खीर नित खाय ॥ ७० ॥
नारायण दो बात को दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने आप कियो उपकार ॥ ७१ ॥
दो बातन कों भूल मति जो चाहै कल्यान।
नारायण इक मौत को दूजे श्रीभगवान ॥ ७२ ॥
वशीकरण के मंत्र हैं नारायण यह चार।
रूप राग आधीनता सेवा भली प्रकार ॥ ७३ ॥
नारायण कीजै सदा दुष्ट संग को त्याग।
जिमि लुहार के ढिग परै बदन चिंगारी आग ॥ ७४ ॥
फूली लता करीलकी खिले मनोहर फूल।
नारायण ताके निकट भ्रमर न बैठत भूल ॥ ७५ ॥

नारायण ढिग संत के गये न होइ बिगार ।
जिमि बिन मोल सुगन्धिता मिलैसमीप अतार ॥ ७६॥

अथ संत लक्षण ॥

तजि पर अवगुण नीर कूं खीर गुणन सों प्रीति ।
हंस संत की सर्बदा नारायण यह रीति ॥ ७७ ॥
तनक मान मनमें नहीं सबसों राखत प्यार ।
नारायण ता संत पै बार बार बलिहार ॥ ७८ ॥
अति कृपाल संतोष वृति युगुल चरण में प्रीति ।
नारायण ते संत बर कोमल बचन बिनीति ॥ ७९ ॥
उदासीन जग सों रहैं यथा मान अपमान ।
नारायण ते संत जन निपुन भावना ध्यान ॥ ८० ॥
मगन रहैं नित भजन में चलत न चाल कुचाल ।
नारायण ते जानिये यह लालन के लाल ॥ ८१ ॥
पर हित प्रीति उदार चित विगत दंभ मद रोष ।
नारायण दुख में लखैं निज कर्मन को दोष ॥ ८२ ॥
भक्ति कल्पतरु पात गुण कथा फूल बहु रंग ।
नारायण हरि प्रेम फल चाहत संत बिहंग ॥ ८३ ॥
जिनको पूरण भक्ति है ते सब सों आधीन ।
नारायण तजि मानमद ध्यान सलिलके मीन ॥ ८४ ॥
नारायण हरिभक्त की प्रथम यही पहिचान ।
आप अमानी ह्वै रहै देत और को मान ॥ ८५ ॥
कपट गांठ मनमें नहीं सबसों सरल सुभाव ।
नारायण ता भक्त की लगी किनारे नाव ॥ ८६ ॥

जिनको मन हरि पद कमल निशि दिन भ्रमर समान।
नारायण तिन सों मिलें कबू न होवै हान॥ ८७॥
नारायण जो कृपा कर संत पधारे धाम।
आगे ते उठि प्रीति सों कीजै दंड प्रणाम॥ ८८॥
संत दरश की लालसा नारायण जो होय।
रीते कर नहिं जाइये फूल पत्र फल तोय॥ ८९॥
अजापुत्र में में कहत दिये आपने प्रान।
नारायण मैना भली खाय मलीदा सान॥ ९०॥
नारायण दुख सुख उभय भ्रमत यथा दिन रात।
बिन बुलाय जिमि आ रहैं बिना कहे त्यों जात॥ ९१॥
नारायण हरि कृपा की तकत रहे नित बाट।
जानहार जिमि पारको निरखत नौका घाट॥ ९२॥

कृपानिधान की शोभा॥

रतिपति छबि निन्दत बदन नील जलज सम श्याम।
नव यौबन मृदु हास बर रूप राशि सुख धाम॥ ९३॥
ऋतु अनुसार सुहावने अद्भुत पहिरे चीर।
जो निज छबि सों हरत हैं धीरजहू की धीर॥ ९४॥
मोर मुकुट की लटक छबि लाजत मदन किरोर।
चन्द्रबदन सुख सदन पै भावक नयन चकोर॥ ९५॥
जिन मोरन के पंख हरि राखत अपने शीस।
तिनके भागिन की सखी कौन कर सकै रीस॥ ९६॥
घुंघुरारी अलकावली मुख पै देत बहार।
रसिक मीन मनके लिये काटे अति अनियार॥ ९७॥

मकराकृत कुंडल श्रवण झांई परत कपोल।
रूप सरोवर मांहि द्वै मछली करत किलोल ॥ ९८ ॥
शुक लजात लखि नासिका अद्भुत छबिकी सार।
तामें इक मोती परो अजब सुराहीदार ॥ ९९ ॥
दशन पांति मोती लरी अधर ललाई पान।
ताहू पै हंसि हेरिबो को लखि बचै सुजान॥ १००॥
मृदु मुसक्यानि निहारि कै धीर धरत है कौन।
नारायण कै तन तजै कै बौरा कै मौन॥ १०१ ॥
अधरामृत सम अधर रस जानत बंशी सार।
सप्त सुरन सों सप्त करि कहत पुकारपुकार ॥ १०२ ॥
रतनन की कंठी गरे मुक्तमाल बनमाल।
त्रिविधि ताप तीनो हरैं जो निरखत नन्दलाल॥ १०३ ॥
हस्त कमल पै मणिनमय जगमगात कर फूल।
जिनकीछबिलखिशंभुरिपु गयोसकलसुधिभूल॥ १०४॥
उदर मांहि त्रिबली शुभग नाभि रुचिर गम्भीर।
छबि समुद्र के निकट अति भई त्रिबेणी भीर ॥ १०५ ॥
गजमुक्ताकी लरी द्वै अति अमोल छबि कंद।
सो अद्भुतकटि करधनी पहिरि रह्यो वृजचंद ॥ १०६ ॥
गोल गुलफ पै सज रहे नूपुर शोभा ऐन।
जिनकी धुनिसुनि जगतसों मिटै लैन अरु दैन ॥ १०७॥
युगुल चरण दश अगुरियां दशधा भक्ति सुहाय।
नखन जोति लखि चन्द्रमा गयो अकाशउड़ाय॥ १०८॥
तरुवन की लखि अरुणता कबि जन मन सकुचात।

इनकी उपमा कह कहैं पटतर नाहिं दिखात ॥ १०९॥
व्रज बीथिन जब सांवरो चलत सुचाल मतंग।
पग पग में छवि की झरी होत चलै इक संग ॥ ११० ॥
जे रसिकन उर नित बसैं निगमागम को सार।
नारायण तिन चरणकी बार बार बलिहार ॥ १११ ॥
नन्दलाल कीरति कुंवरि यह कहिबे को दोय।
ज्यों तनकीछाया प्रगट तनसों बिलग न होय ॥ ११२॥
या विधि सों जो रसिक जन धरत दिवस निशि ध्यान।
नारायण ताकूं सदा गावत वेद पुराण ॥ ११३ ॥
चलत फिरत बैठत उठत लगी रहै यह आस।
श्याम राधिका निरखिबो वृन्दाबिपिन निवास ॥ ११४॥
नारायण होवै भलै जो कछु होवनहार।
हरिसों प्रीति लगायकै अब कह शोच बिचार ॥ ११५॥
नारायण अति कठिन है हरि मिलिबे की बाट।
या मारग सों पग धरै प्रथम शीश दे काट ॥ ११६ ॥

अथ प्रेमलक्षण ॥

नारायण मनमें बसी लोक लाज कुलकान।
आशिक होना रब्ब को हाँसी खेल न जान ॥ ११७ ॥
नेह डगरमें पग धरै फेरि बिचारै लाज।
नारायण नेही नहीं बातन को महराज ॥ ११८ ॥
चौसरि बिछी सनेह की लगे शीश के दाव।
नारायण आशिक बिना को खेलै चित चाव ॥ ११९ ॥
गढ़ि गढ़िकै बातैं कहै मनमें तनक न प्रीत।

नारायण कैसे मिलैं साहिब सांचो मीत ॥ १२० ॥
जो शिर सांटे हरि मिलैं तौ पुनि लीजै दौर।
नारायण ऐसी न हो गाहक आवै और ॥ १२१ ॥
सो क्यों सेवै बाग बन गुलम लता तरु मूल।
नारायण जाके हृदय फूलि रह्यो वह फूल ॥ १२२ ॥
नारायण प्रीतम निकट सोई पहुंचन हार।
गेंद बनावै शीशको खेलै बीच बजार ॥ १२३ ॥
लग्न लग्न सबही कहैं लग्न कहावै सोय।
नारायण जा लग्न में तन मन दीजै खोय ॥ १२४ ॥
नारायण घाटी कठिन जहां नेह को धाम।
बिकल मूर्छा सिसकबो यह मग में बिश्राम ॥ १२५ ॥
नारायण या डगर में कोऊ चलतहै बीर।
पग पग में बरछी लगें स्वास स्वास में तीर ॥ १२६ ॥
बरणाश्रम उरझे कोऊ बिधि निषेध ब्रत नेम।
नारायण बिरले लखे जिन मिलि उपजै प्रेम ॥ १२७ ॥
प्रेम नगर प्रीतम बसै पै नारायण नेत।
जानहार या ग्राम कूं कोऊ दिखाई देत ॥ १२८ ॥
प्रेमी छुट या प्रेमकी और न जानै सार।
नारायण बिन जौंहरी जैसे लाल बजार ॥ १२९ ॥
तौ लौं यह फांसी गरे वर्णाश्रम ब्रत नेम।
नारायण जौलौं नहीं मुंह दिखरायो प्रेम ॥ १३० ॥
नारायण जाके हिये उपजत प्रेम प्रधान।
प्रथमहिं वाकी हरत हैं लोक लाज कुलकान ॥ १३१ ॥

नारायण या प्रेम को नद उमड़त जा ठौर।
पल में लाज मृजाद के तट गेरत दो और ॥ १३२ ॥
विधि निषेध श्रुति वेद की मेड़ देत सब मेट।
नारायण जाके बदन लागत प्रेम चपेट ॥ १३३ ॥
नारायण ज्ञाता अगम सबको संमत एह।
बिना प्रेम करमादि विधि ज्यों ऊसर में मेह ॥ १३४ ॥
नारायण जप योग तप सब सों प्रेम प्रवीन।
प्रेम हरी कूं करत है प्रेमी के आधीन ॥ १३५ ॥
नारायण यह प्रेम रस मुख सों कह्यो न जाय।
ज्यों गूंगो गुड़ खात है सैनन स्वाद लखाय ॥ १३६ ॥
प्रेम खेल सब सूं कठिन खेलत कोउ सुजान।
नारायण बिन प्रेमके कहा प्रेम पहिचान ॥ १३७ ॥
जिनै प्रेम प्यालो पियो झूमत तिनके नैन।
नारायण वा रूप मद छके रहैं दिन रैन ॥ १३८ ॥
नारायण जाके हिये लगी प्रेम की रोर।
ताही को जीवन सुफल दिन काटैं सब ओर ॥ १३९ ॥
नेम धर्म धीरज समझि शोच बिचार अनेक।
नारायण प्रेमी निकट इनमें रहैं न एक ॥ १४० ॥
रूप छके झूमत रहैं तनको तनक न ज्ञान।
नारायण दृग जल भरे यही प्रेम पहिचान ॥ १४१ ॥
मन में लागी चट पटी कब निरखूं घनश्याम।
नारायण भूलो सबी खान पान बिश्राम ॥ १४२ ॥
सुनत न काहू की कही कहै न अपनी बात।

नारायण वा रूप में मगन रहै दिन रात ॥ १४३ ॥
देह गेह की सुधि नहीं टूटि गई जग प्रीत।
नारायण गावत फिरै प्रेम भरे सब गीत ॥ १४४ ॥
धरत कहूं पग परत कित सुरत नहीं इक ठौर।
नारायणप्रीतम बिना दीखत नहिं कछु और ॥ १४५ ॥
भयो बावरो प्रेममें डोलत गलियन माहिं।
नारायणहरि लग्नमें यह कछु अचरज नाहिं ॥ १४६ ॥
लतन तरे ठाढ़ो कबूं कबहूं यमुना तीर।
नारायण नैनन बसी मूरति श्याम शरीर ॥ १४७ ॥
प्रेम सहित गद्गद गिरा कढ़त न मुख सों बात।
नारायण महबूब बिन और न कछू सुहात ॥ १४८ ॥
कह्यो चहै कछु कहत कछु नैन नीर सुर भंग।
नारायण बौरा भयो लग्यो प्रेम को रंग ॥ १४९ ॥
कबहुं हँसै रोवै कबहुं नाचै करि गुण गान।
नारायण सुधि तन नहीं लग्यो प्रेमको बान ॥ १५० ॥
सुरति लगी वा ध्यान में सुनत और की बात।
नारायण उत्तर दियो मृदुल मनोहर गात ॥ १५१ ॥
जाके मन वह छबि बसी सोवतहूं बरीत।
नारायण कुण्डल निकट अद्भुत अलक सुहात ॥ १५२ ॥
नारायण जाके दृगन सुन्दर श्याम समाय।
फूल पात फल डारमें ताको वही दिखाय ॥ १५३ ॥
ब्रह्मादिक के भोग सुख बिष सम लागत ताहि।
नारायण ब्रजचन्द की लगन लगी है जाहि ॥ १५४ ॥

नारायण हरि प्रीतिमें जाको तनमन चूर।
ताहि न ममता और सों निकट रहो वा दूर॥ १५५॥
जाके मनमें बसि रही मोहन की मुसक्यान।
नारायण ताके हिये और न लागत ज्ञान॥ १५६॥
जो घायल हरि दृगन के परे प्रेम के खेत।
नारायण सुनि श्याम गुण एक सङ्ग रो देत॥ १५७॥
नारायण जाको हियो बिंध्यो श्याम दृग बान।
जगके भावै जीव तौ है वह मृतक समान॥ १५८॥
सुख सम्पति धन धाम की ताहि न मनमें आश।
नारायण जाके हिये निशि दिन प्रेम प्रकाश॥ १५९॥
नारायण जाके हृदय प्रीति लगी घनश्याम।
जाति पांति कुलसों गये रहे न काहू काम॥ १६०॥
नारायण तब जानिये लगन लगी या काल।
जितजित में दृष्टी परै दीखै मोहनलाल॥ १६१॥
नारायण व्रजचन्द्र के रूप पयोनिधि माहिं।
डूबत बहुतै एक जन उछरत एकौ नाहिं॥ १६२॥
पराभक्ति अरु ज्ञानमें तनक नहीं कछु भेद।
नारायण मुख प्रेम है कहैं सन्त अरु वेद॥ १६३॥
पराभक्ति याको कहैं जिततित श्याम दिखात।
नारायण सों ज्ञानहै पूरणब्रह्म लखात॥ १६४॥
नन्दलाल दशरथ कुंवर उभय एक सरकार।
नारायण जे दो कहैं ते नर बिना बिचार॥ १६५॥
नारायण सब एकहै रङ्ग रूप तिल रेख।

उनके दृग गम्भीर हैं इनके चपल बिशेख ॥ १६६ ॥
नारायण या बातसों अधिक और नहिं बात।
रसिकनको सतसङ्गनित युगुल ध्यान दिनरात ॥ १६७॥
गुण मन्दिर सुन्दर युगुल मङ्गल मोद निधान।
नारायण निज चरण रति यह दीजै बरदान ॥ १६८ ॥

इति श्रीअनुरागरस नारायण स्वामीकृत
सम्पूर्णम् ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सभा विलास	सहस्त्ररजनीचरित्र	बालाबोध	अपराधभंजनस्तोत्र
तुलसीशब्दार्थप्र०	राबिन्सन्‌काइतिहास	विद्यार्थीकी प्रथमपु०	कायस्थकुलभास्कर
भजनावली	सीताहरण	किताबजंत्री	कायस्थधर्मनिरूपण
प्रेमरत्न	सती विलास	गणितकामधेनु	तथा छोटा
युगलविलास	सौदागरलीला	लीलावती	मथुरासभा
चित्रचन्द्रिका	**मुतफ़र्कात**	पटवारियोंकी पु० ४भा	भाषातत्वप्रकाश
बारहमासा बलदेव प्र०	शनिश्चरकी कथा	**वैद्यकभाषा**	मार्कण्डेयपुराण
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	निघण्ट	**ज्योतिष**
गंगालहरी	गोपीचंद भरतरी	अमर विनोद	मुहूर्त्तगणपति
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजी	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
जगद्विनोद	अवधयात्रा	औषधिसंग्रहकल्प	मुहूर्त्तचिन्तामणि स०
शृंगार बत्तीसी	भरतरी गीत	वल्ली	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स०
राग	दानलीलावनागलीला	अमृतसागरबड़ा	मुहूर्त्तदीपक
रागप्रकाश	दोहावलीरत्नावली	व छोटा	बृहज्जातक सटीक
लावनी	गोकर्णमाहात्म्य	वैद्यमनोत्सव	जातकालंकार स०
किस्सा वगैरह	श्रीगोपालसहस्रना०	**ज्योतिषभाषा**	जातकाभरण
नानार्थनौसंग्रहावली	कथासत्यनारायणस०	जातकचन्द्रिका	होरामकरन्द
ब्रह्मसार	हनुमान बाहुक	जातकालंकार	**संस्कृत उर्दू टी० स०**
शिवसिंहसरोज	जनक पच्चीसी	दैवज्ञाभरण	मनुस्मृति
भक्तमाल	हरिहर सगुण निर्गु-	ज्ञानस्वरोदय	विष्णुहारीत
इन्द्रसभा	ण पदावली	इन्द्रजाल	महिम्नस्तोत्र
विक्रमविलास	बनयात्रा	**संस्कृतकी पुस्तकें**	व्रतार्क
बैताल पच्चीसी	कायस्थवर्णनिर्णय	लघुकौमुदी	याज्ञवल्क्य स्मृति
सिंहासन बत्तीसी	बिहार वृन्दावन	सिद्धान्त चन्द्रिका	**संस्कृत भाषाटी०**
पद्मावती खंड	समर बिहार वृन्दावन	अमरकोष तीनोंका० स०	अमरकोष
शुक बहत्तरी	कल्पभाष्य	पञ्चमहायज्ञ	याज्ञवल्क्यस्मृति
बकावली सुमन	**दरसी**	निर्णयसिन्धु	संध्यापद्धति
चहार दरवेश	अक्षरावली	संग्रहशिरोमणि	व्रतार्क
क़िस्सा हातमताई	स्वयम्बोध	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीताटी० ह० वं०
अपूर्व्व कथा	ज्ञानचालीसी	दुर्गापाठ मूल तथा स०	भगवद्गीताटी० शा० गि०
क़िस्सा गुलसनोबर	दोहावली	विष्णुभागवत	गीत गोविंद

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
कथा सत्यनारायण	विद्यांकुर	रामायण तुलसीकृत	सेक स्टाम्प १ सन् १८६९ ई०
परमार्थसार	परमार्थसार	बालकाण्ड	सेक स्टाम्प अदालत
शार्ङ्गधरसंहिता	पदार्थज्ञानविटप	अयोध्याकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०
पाराशरी सटीक	भोजप्रबन्धसार	आरण्यकाण्ड	मजमूआ सेक अवध
शीघ्रबोध सटीक	राजनीति	किष्किन्धाकाण्ड	लगान १८ सन् १८६८ ई०
लघुजातक	भाषालघुव्याकरण	सुन्दरकाण्ड	पुरक्षादारी २६ सन्
षट्पञ्चाशिका	१ भाग तथा २ भाग	लंकाकाण्ड	१८६६ ई० वग़ैरह
सामुद्रिक	भाषातत्वदीपिका	उत्तरकाण्ड	सेक स्टाम्प दस्तावेज़ा-
गरुड़पुराण	भाषाचन्द्रोदय	गुटका १ भा० २ व ३	त सन् १८६९ ई०
रामविवाहोत्सव	भूगोलतत्व	हिदायतनामा मुदर्रसान्	सेक ताल्लुक़ेदारान्
अपरोक्षानुभव	भूगोलदर्पण	पशुचिकित्सा	मक़रूज़ अवध २४ स-
सरिश्ते तालीम की	इतिहासतिमिरनाशक	पट्टा बरवत कैथी	न् १८७० ई०
पुस्तकें	१ भाग २ व ३ भाग	तथा क़बूलियत	सेक चौपायों का मदा-
संस्कृत	अवधदेशीय भूगोल	रजिस्टर दाखिल ख़ारि-	ख़लत बेजा १ सन्
ऋजुपाठ १ भा० २ व ३	इंगलिस्तान का इतिहास	ज नुलबामदर्सह	१८७७ ई०
धात्वर्णव	हितोपदेशिका	रजिस्टर हाज़िरी पाठशाला	सेक मजरूआ ज़ाबि-
नागरी कैथी	बालाभूषण	क़ानून कैथी	ता फ़ौजदारी १० सन्
वर्णमाला १ भा० व २ भा०	पद्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	१८७२ ई०
तथा कैथी फ़ारसी	भाषाकाव्यसंग्रह	उर्दू कैथी महाजनीटि-	सेक माल गुज़ारी
नागरी	कवित्तरत्नाकर १ भा०	कट के लाइसन्स का	मग़रबी व शिमाली
हरूफ़ मुफ़र्दात	तथा २ भाग	सेक २ सन् १८७८ ई०	१९ सन् १८७३ ई०
अक्षरारम्भ	मंगलकोष	नागरी	तरमीम मजमूआ
वर्णप्रकाशिका १ भा०	अंकप्रकाश	सेक लगान मग़रबी	ज़ाबिता फ़ौजदारी
तथा २ भाग	गणितप्रकाश १ भा०	व शिमाली १० सन्	११ सन् १८७४ ई०
सूर्यपुर की कहानी	तथा २ भा० ३ व ४	१८५९ ई०	तक़ावी के क़ायदे स-
धर्मसिंह का वृत्तांत	गणितक्रिया	इंडियन पिनल कोर्ट	बाल वजवाब पुलिस
शिक्षावली	क्षेत्रप्रकाश	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	अवध रुहेलखंड रे-
शिशुबोध	क्षेत्रचन्द्रिका २ भा०	जदारी सेक २५ सन्	लवे का दस्तूरुलअ-
पत्रहितैषिणी	सकीलहायरा	१८६१ ई०	मल
पत्रदीपिका	रेखागणित १ भा० व २	सेक रजिस्टरी २० सन्	इति
विद्याचक्र	बीजगणित १ भाग	१८६६ ई०	